गोविभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 12 • अंक : 04 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे 20 जुलाई, 2014

सरकार और मूल्य नियंत्रण

- जे.सी.कुमारप्पा

वस्तुओं की कीमत निरंतर बढ़ने से रोकने के लिए सकरार ने कुछ योजनाएं बनाई हैं। ये सब योजनाएं निर्धारित करते समय सरकार के सामने केंद्रित उत्पादन के बड़े-बड़े कारखाने थे यह स्पष्ट है। यदि इन कारखानों के उत्पादन के सामने खेती तथा अन्य ग्राम उद्योगों का उत्पादन रखें तो कारखानों का उत्पादन दरिया में खसखस जितना ही साबित होगा। इसलिए यदि सचमुच उत्पादन बढ़ाना हो तो खेती और ग्रामोद्योग में थोड़ा-सा संशोधन करने से एकदम बहुत फर्क पड़ सकता है। परंतु उत्पादन का यह पहलू एकदम भुला दिया गया दिखाई देता है।

यह हमेशा ख्याल में रखना चाहिए कि मौजूदा भावों की वृद्धि के लिए सरकार की फिजूल खर्ची बहुत कुछ हद तक जिम्मेदार है और यह फिजूल खर्ची बहुत हद तक सरकारी आय और व्यय के झूठे मानदंडों के कारण निर्माण हुई है। इसलिए मौजूदा हालत में उपाय यही हो सकता है कि पैसे का मूल्य बढ़ा दिया जाए और किसी एक व्यक्ति विशेष के हाथों में पैसा इकट्ठा न होने दिया जाए। रुपयों की कीमतों का फर्क निकाल देने के लिए किसी भी सरकारी महकमे का खर्च एकदम घटा देना चाहिए और ऐसा करने का सबसे आसान तरीका है लगान वसूली और खर्चे की मदों का विकेंद्रीकरण कर देना। हमें स्थानीय प्रबंध करने वाली पुरानी ग्राम पंचायत जैसी संस्थाएं निर्माण करनी चाहिए। ऐसा जब तक हम नहीं करते तब महंगाई रोकने के आज के हमारे सारे उपाय केवल उपर से मलहम पट्टी करने जैसे होंगे, रोग के मूलगामी इलाजों जैसे न होंगे।

उसी प्रकार बहुउद्देशीय समवाय समितियों द्वारा गांवों में कुछ हद तक वस्तु विनिमय की प्रथा प्रचलित कर पैसे का उपयोग मर्यादित कर देना चाहिए।

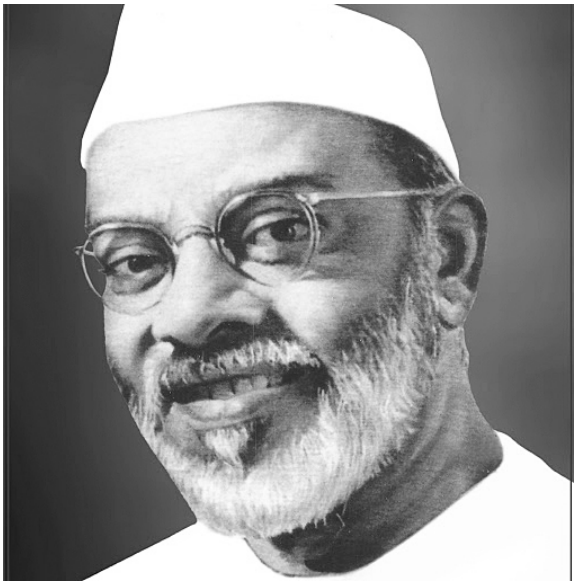

मौजूदा हालत में ये सुधार शासन यंत्र में शायद कुछ शिथिलता निर्माण करें, पर उसे गवारा करके भी हमें ग्रामीणों को योग्य दिशा में शिक्षित कर देना चाहिए ताकि वे कुछ जिम्मेदारी उठाने के काबिल हो जाएं। सदियों की विदेशी हुकूमत के कारण हम सार्वजनिक कर्तव्यों की भावना खो बैठे हैं। वह भावना फिर से निर्माण करने के लिए शायद पचासों बरस लगें, पर यदि हमें लोगों को स्वराज्य की जिम्मेदारी उठाने योग्य बनाना है तो इतना समय हमें रुकना ही पड़ेगा।

- ग्राम उद्योग पत्रिका 1948

सम्पादकीय

सूखे की आहट

इस साल भारत में सूखे के आसार नजर आ रहे हैं। मौसम विज्ञानी लगातार देश की जनता के दिलासा दे रहे हैं कि मानसून आएगा, लेकिन हकीकत कुछ और बयां हो रही है। अनेक राज्यों में अभी तक औसत से बहुत कम वर्षा हुई है। केंद्र और राज्य सरकारों ने सूखे की स्थिति से निपटने के योजना बनाना प्रारंभ कर दिया है। देश में बड़े बांध बनने के बावजूद आज भी खेती वर्षा के पानी पर निर्भर है। कुंए, बावड़ियां, तालाब गर्मी के पहले ही दम तोड़ जाते हैं। यदि बरसात नहीं हुई तो पानी के वैकल्पिक स्रोत भी रीते रह जाएंगे। गतवर्ष इन्हीं दिनों देश ने उत्तराखंड में जलप्लावन का नजारा देखा था। इसमें हजारों जानें गई थीं। प्राकृतिक आपदा के लिए एक तो आसमानी शक्तियां जिम्मेदार होती हैं, दूसरी सुल्तानी। आसमानी शक्तियों को मनुष्य श्रद्धाभाव से देखता है और उसे प्रसन्न करने के लिए तरह-तरह के अनुष्ठान, जप-तप-यज्ञ इत्यादि करता है। वह उस सर्वशक्तिमान के सामने अपनी गलतियों की क्षमा मांगता है। अपने पापों का प्रायश्चित करता है, जबकि सुल्तानी शक्तियां अपनी गलतियों को कभी मानने को तैयार नहीं होती हैं। आज यदि पर्यावरण में इतना परिवर्तन दिखाई दे रहा है, तो उसके लिए सिर्फ सुल्तानी शक्तियां अर्थात् सरकारें और वे उद्योग जिम्मेदार हैं, जिनका अंतिम लक्ष्य अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है। जनता ने भरोसा करके उनके हाथों में अपने जीवन की बागडोर सौंपी, परंतु उन्होंने नीतियां सदैव उन लोगों के पक्ष में बनायीं जिनका आमजन से विरोध रहा हो। जंगलों को काटना, नदियों को जोड़ना, पहाड़ों को चीरना, विशाल बांध बनाना, सीमेंट के जंगल खड़े करते जाना, जीवाश्म ईंधन का उपयोग बढ़ाते जाना, आवागमन के लिए तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतम साधनों का उपयोग करना विकास की श्रेणी में आता है। गोवंश इस देश का प्राण है, परंतु सरकारें उसके कतल पर प्रतिबंध लगाने में स्वयं को असहाय पाती हैं। सभी को शुद्ध पेयजल देना सरकार की जिम्मेदारी है, परंतु वह बोतलबंद पेय को बढ़ावा देती है। सभी को प्राकृतिक हवादार आवास मिलना चाहिए, परंतु वह मुर्गी के दड़बे जैसे आवास बनाकर वाहवाही लूटती है। वस्त्र निर्यात में हम दुनिया में दूसरे नंबर पर हैं, परंतु हमारे देश में अधनंगों की फौज है। हम प्रकृति को विनष्ट करने के सारे जतन कर रहे हैं, उसके बाद भी हमारी यही अपेक्षा है कि वह हमारी सेवा में सदैव तत्पर रहे। देश में प्राकृतिक संतुलन स्थापित करने के लिए आमजन को सरकारों की विदाई करके प्रायश्चित्त करने का समय है। देश के नीति निर्धारकों ने जनता को आश्वासन दिया था कि उनके हाथों में देश का पर्यावरण सुरक्षित है, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। चंद लोगों को फायदा पहुंचाने वाली नीतियां बनाकर अधिसंख्य जनता के जीवन को खतरे में डाल दिया है। सरकारों ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ ही नहीं की है, बल्कि उसका शरीर क्षत-विक्षत कर दिया है।महात्मा गांधी का यह कथन प्रसिद्ध है कि प्रकृति सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है लेकिन किसी एक के लालच को नहीं। भारत पश्चिमी देशों की राह पर तेज रफ्तार से बढ़ा जा रहा है इसका खामियाजा उसे अनेक समस्याओं के रूप में भुगतना पड़ रहा है। उसे अपने मूल ग्रामीण चरित्र की ओर लौटकर ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी जिससे वह प्रकृति की सहयोगी हो न कि उसके विनाश का कारण बने तभी आगामी पीढ़ियाँ प्रकृति के संसाधनों का उपयोग कर पाएंगी। अनेक राज्यों में छिटपुट वर्षा के छीटें पड़ रहे हैं इससे धरती माँ और जीव-जगत की प्यास बुझने वाली नहीं है। हमें अभी से ही जल संसाधन को सहेजने के प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिए। इसके बाद भी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारी सारी गलतियों को क्षमा कर और अपनी करुणा से इस पूरे देश को सराबोर कर दे।

- डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

इस अंक में ...

- सृष्टि संतुलन का गोविज्ञान
- नरेन्द्रभाई की पवनार यात्रा
- प्रेरक कहानियाँ
- पत्र संपुट
- खादी-सभा : 9-10 सितंबर, 2014 को सेवाग्राम वर्धा में

सृष्टि संतुलन का गोविज्ञान

- नरेंद्र दुबे

आधुनिक युग में विज्ञान की महत्वपूर्ण खोज है 'इकोलॉजी' यानी पारिस्थितिकी। यह शब्द कठिन है इसलिए 'सृष्टि-संतुलन शास्त्र' शब्द प्रयुक्त किया है। महात्मा गांधी के शब्दों में 'गोरक्षा हिन्दू धर्म की दुनिया को अनुपम देन है।' भारत में वैदिक काल से गोवंश अवध्य रहा है। भारत में जितना प्रयत्न गोपालन, गोसवंर्धन और गोरक्षण के लिए किया है वह बेमिसाल है। इसके परिणामस्वरूप भारत में सुव्यवस्थित गोविज्ञान का विकास हुआ है जो सारे विश्व में फैला। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि भारत ने संपूर्ण गोवंश और गोउत्पाद को उपयोगी बनाया। जैसे दूध से दही, मक्खन, पनीर, घी, मावा, मिठाइयां आदि खाद्यान्न प्राप्त किए, गोबर-गोमूत्र से खाद बनाई, कीट नियंत्रण किया और औषधियां बनाईं। गोउर्जा से चलने वाले अनेक कृषि यंत्र, सिंचाई के साधन, ग्रामोद्योग यंत्र और उपकरण, परिवहन के साधन आदि बनाए। गोवंश के आसपास एक संपूर्ण टेक्नालॉजी का विकास किया। गोवंश की स्वाभाविक मृत्यु होने पर चमड़ा, हड्डी, चरबी, बाल, सींग, खुर और मांस से अनेक ग्रामोद्योगों का विकास किया। दुनिया के अन्य देशों में गो-केंद्रित ग्राम्य-संस्कृति और कृषि-ग्रामोद्योग आदि के अर्थतंत्र का ऐसा विकास नहीं हुआ जैसा भारत में हुआ था। यूरोप और मध्यपूर्व के देशों में गाय का उपयोग दूध के लिए, घोड़े का खेती के लिए और बछड़े का मांस के लिए किया गया।

भारत में बैल अपने औसतन 20 साल के जीवनकाल में लगभग 17 साल तक अनवरत सेवा देता है। वह इतना उत्पादक है कि उसकी हत्या करना अकल्पनीय है। गाय अपनी 20 साल की आयु के अंतिम तीन-चार सालों तक न तो बछड़ा देती है और न दूध। वह गोबर-गोमूत्र ही देती है। भारतीय मनीषा ने उसकी रक्षा के लिए उसे मातृपद दिया। यहां की संस्कृति में गाय को जो स्थान मिला, वह इसके अनंत उपकारों के बदले भारतीयों ने कृतज्ञता ज्ञापन के लिए दिया। मध्यपूर्व के बादशाह जब भारत आए, तब उन्होंने भारतीयों की भावनाओं का सम्मान करते हुए गोवंश के कतल पर प्रतिबंध लगाया।

भारत की गुलामी का आरंभ पश्चिम के उद्योगवाद से उपजी बाजार प्रधान संस्कृति से हुआ। इसकी शुरुआत ही बैल आधारित कृषि, खादी तथा ग्रामोद्योगों के नष्ट होने से हुई। जैसे-जैसे ग्रामोद्योग टूटते गए बैल बेरोजगार होते गए और उनके साथ ग्रामीणजन भी शहरों की ओर पलायन करने लगे। अंग्रेजी राज में गाय-बैलों का बेतहाशा कत्ल शुरू हुआ और थोड़े से मांसाहारियों को सस्ते से सस्ता गोमांस मिलने लगा, क्योंकि अधिसंख्य भारतीयों ने गोमांस को वर्जित माना था। अंग्रेज व्यापारी सस्ता कतली चमड़ा विदेशों में निर्यात करने लगे और यूरोप में बड़े-बड़े चर्मोद्योग खड़े हो गए। यहां तक कि जर्मनी ने मृत चर्म को नरम बनाने की टेक्नालॉजी का विकास कर भारत से मृतचर्म भी खींच लिया।

अशांति का कारण तेल आधारित उद्योगवाद

भारत सहित विश्व में आज जो भौतिक समृद्धि दिखाई देती है, उसका मुख्य आधार जीवाश्म ईंधन तेल, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि है। औद्योगिक क्रांति और उस पर आधारित औद्योगिक संस्कृति और सभ्यता जीवाश्म ईंधन भंडारों का विदोहन किया जा रहा है। यदि यही गति भविष्य में भी जारी रही तो कुछ ही सालों में ये भंडार समाप्त हो जाएंगे और सृष्टि का संतुलन खतरनाक बिंदु तक असंतुलित हो जाएगा। विश्व का सबसे समृद्धि और विकसित देश अमेरिका इससे बेहद चिंतित है कि उसकी अर्थव्यवस्था अरब देशों से प्राप्त तेल पर आश्रित है। यद्यपि अमेरिका और ब्रिटेन के पास पर्याप्त खनिज तेल भण्डार है। लेकिन वे इस बात से भी चिंतित हैं कि इनके उपयोग से आकाश, जल, वायु और मिट्टी में जो प्रदूषण बढ़ रहा है वह महाविनाश को निकट ला रहा है।

भारत की हालत तो निरंतर बदतर हो रही है। भारत के पास विश्व में उपलब्ध खनिज तेल भंडार क्षमता का मात्र 0.5 प्रतिशत है जबकि दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी भारत में रहती है। हम अपनी जरूरत का लगभग 80 प्रतिशत डीजल, पेट्रोल, गैस अन्य देशों से आयात करते हैं। इस पर लगभग 80 हजार करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा व्यय की जाती है। भारत के विदेश व्यापार घाटे का प्रमुख कारण पेट्रोल बिल ही है।

शांति के लिए बैल संस्कृति

भारत के पास 10 करोड़ भारवाहक पशु हैं। इनसे आज भी 40 हजार मेगावाट उर्जा मिलती है। जितनी उर्जा हमारे सारे विद्युत गृह संचारण हानि के बाद देते हैं, उतनी उर्जा देने के साथ-साथ ये पशु गोबर-गोमूत्र की सजीव खाद भी देते हैं। इनसे ऐसी उर्जा मिलती है जिसे किसान जमीन जोतने, सिंचाई, सामान ढोने आदि में अर्थात अनेक प्रकार से उपयोग में ला सकता है। जो पशु को चारा आदि खिलाने से मिल जाती है। ऐसी उर्जा न तो प्रदूषण करती है और न इसके लिए विदेशी मुद्रा का ही व्यय होता है। गोबर से पर्यावरण सुरक्षा

गोबर-गोमूत्र का जैसा उपयोग भारत में किया जाता है वह उसकी अपनी विशेषता है। गोबर-गोमूत्र पर जितना संशोधन भारत में हुआ है वह अन्य किसी देश में नहीं हुआ। बिगड़े हुए पर्यावरण को सुधारने में गोबर, गोमूत्र अहम भूमिका निभा सकते हैं। गोबर में करोड़ों ऐसे पोषक जीवाणु हैं जो रोगाणुओं और विषाणुओं को समाप्त कर सकते

हैं। आज हम करोड़ों रुपये की रासायनिक खाद का आयात कर विदेशी मुद्रा का व्यय कर रहे हैं। साथ में जल, जमीन और वायुमण्डल प्रदूषित कर रहे हैं।

ट्रेक्टर खेती अवैज्ञानिक

इन दिनों रेडिया, टीवी, समाचार पत्रों में ट्रेक्टरों, हार्वेस्टरों का जोर-शोर से प्रचार चल रहा है। सरकारें इनकी खरीदी पर अनुदान दे रही हैं। बैंक आसान शर्तो पर ऋण दे रहे हैं। सन् 1960 में मात्र 600 ट्रेक्टर बनते थे और अब ढाई लाख प्रतिवर्ष बनते हैं। एक ट्रेक्टर औसतन 12 बैलों का काम ले लेता है यानी 12 बैल बेरोजगार कर देता है। आज भी भारत में खेती बैलों से की जाती है, लेकिन हालत तेजी से बदल रहे हैं।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि खाद, बीज, सिंचाई आदि अन्य बातों को छोड़ दें तो भी बैल खेती, बैल जुताई से ज्यादा उत्पादन होता है। ट्रेक्टर के वनज से जमीन सख्त हो जाती है और उसकी उर्वरा शक्ति भी घट जाती है। सिंचाई में ज्यादा पानी लगता है ओर बरसात के दिनों में ट्रेक्टर निकम्मा साबित होता है। देश में ट्रेक्टरों और हार्वेस्टरों के प्रसार के कारण बैलों के रोजगार के दिन घटकर 50-60 रह गए हैं। साल में 300 दिन बिना काम के खिलाना किसी लखपति के लिए भी असंभव है। इसलिए बैल कतलखानों में भेजे जा रहे हैं। उनका मांस निर्यात किया जा रहा है। हड्डियां जिलेटिन कारखानों में, खून दवा उद्योग में और चमड़ा बड़े-बड़े कारखानों में भेजा जा रहा है। इससे ग्रामीण भारत का समस्त सृष्टि संतुलन और अर्थतंत्र बिगड़ गया है।

सस्ता साधन बैलगाड़ी

इस समय देश में लगभग एक करोड़ बैलगाड़ियां हैं। यह सालभर खेतों से घरों तक और गांवों से शहरी मंडियों तक इतना माल ढोती हैं, जितना भारत की रेल ढोती है। बैलगाड़ियों मे सुधार कर उनकी माल ढोने की क्षमता में सहज ही 30 प्रतिशत की वृद्धि की जा सकती है। जुए में सुधार कर बैलों की कार्यक्षमता बढ़ाई जा सकती है। बैलों को पूरा समय काम देने के लिए अनेक स्थानों पर प्रयोग किए जा रहे हैं, परंतु इन्हें तेजी से नहीं अपनाया जा रहा है।

गोदुग्ध सर्वोत्तम आहार

पश्चिमी देशों की तर्ज पर शहरों में दूध की आपूर्ति के लिए डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पश्चिमी देशों में गोपालन का पहला उद्देश्य गोमांस की आपूर्ति है और दूसरा है दूध की आपूर्ति। भारत में खेती के लिए अच्छा बैल चाहिए। यहां वस्तुत: बैल के लिए गोपालन था। इसलिए यहां सर्वोत्तम 30 नस्लों में से 25 नस्ले बैल नस्लें हैं। गोदुग्ध नित्य उपयोगी है। ब्रिटिश काल में दूध का धंधा चला। सरकार ने दूध के लिए भैंस पालन नीति बनाई। चिकनाई के आधार पर दूध की कीमतें तय कीं। जब भैंस दूध नहीं देती है तब उसका कतल करना बुरा नहीं माना जाता।

संकरण नीति घातक

गायों की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए विदेशी नस्ल के वीर्य से संकरण कराने का कार्यक्रम देश में चल रहा है। यद्यपि इससे दूध उत्पादन में वृद्धि होती है, किंतु संकरित बैलों की क्षमता गरमी के मौसम में और दिन में प्रात: 10 बजे के बाद घट जाती है। इसलिए किसान उनसे काम लेना पसंद नहीं करते। इस कारण वे कतलखाने भेजे जाते हैं। सांडों की कतल की अनुमति देने से देश में उन्नत सांडों की संख्या घट गई है। हमारे देश में गोपालन, गोसंवर्धन की राष्ट्रीय नीति नहीं है।

पशुखाद्य का कृत्रिम अभाव

स्वराज्य के बाद भारत में अन्नोत्पादन में तीन गुना ज्यादा वृद्धि हुई है। इसी अनुपात में पशुखाद्य के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। गलत नीतियों के कारण पशुखाद्य का कृत्रिम संकट है। गेंहू के भूसे का और घास का उपयोग कागज कारखानों में हो रहा है। खली निर्यात की जा रही है। हावेस्टर से इस प्रकार कटाई होती है कि भूसा खराब ही होता है। गांव से गोचर भूमि समाप्त हो गई है। अनेक कारणों से गांवों में पशुओं के खड़े रहने की भी जगह नहीं बची है।

देश की बर्बादी का मुख्य कारण : मांस का निर्यात

भारत में सृष्टि संतुलन बिगड़ने के मुख्य दोषी बड़े-बड़े कत्लखाने और चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने हैं। भारत सरकार कत्लखानों को खाद्य प्रशोधन उद्योग मानकर मदद करती है। जो कत्लखाने केवल निर्यात के उद्देश्य से लगाए जाते हैं उन्हें तो विशेष सहायता और भरपूर संरक्षण प्राप्त होता है। इन्हें बिजली, पानी, सड़क, टैक्स छूट आदि के साथ निर्यात के लिए दी जा रही अन्य सुविधाएं भी मिलती हैं। भारत में गाय-बैल कृषि से संबंधित पशु हैं और इनका उपयोग मांस के लिए नहीं हो सकता। इसलिए हमारे संविधान निर्माताओं ने राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में धारा 48 में गाय-बैलों के कत्ल को प्रतिबंधित करने का प्रावधान किया है। किंतु हमारी सरकार इसका पालन नहीं कर रही है। आज गोमांस निर्यात व्यापार में जितना मुनाफा है वह किसी अन्य व्यापार में नहीं है। इसलिए बड़े पैमाने पर गाय-बैलों का संहार चल रहा है।

ग्रामीण चर्मोद्योग टूटने से प्रदूषण बढ़ा

शहरों में पंजीकृत कतलखाने खुल जाने से और दोषपूर्ण नीतियों के कारण गांवों के अधिकांश पशु कत्लखानों में ही जाते हैं। स्वाभाविक मौत से मरने वाले पशुओं की संख्या एकदम घट गई है। इस कारण

ग्रामों का अत्यंत उन्नत और विकसित चर्मोद्योग बिलकुल टूट गया है। देश में जो शहर केंद्रित चमड़ा उद्योग चल रहा है वह गंगा-यमुना, कावेरी-गोदावरी, कृष्णा जैसी नदियों के किनारों पर ही है जो इन सभी पवित्र नदियों को खतरनाक सीमा तक प्रदूषित कर रहा है। गाय-बैलों का कतल बंद होने पर ग्रामीण चर्मोद्योग का फिर से उद्धार हो सकेगा।

संविधान के निर्देशक तत्व की उपेक्षा

संविधान की धारा 48 में गाय, बछड़ा तथा दुधारू और भारवहन करने वाले पशुओं का कत्ल बंद करने का निर्देश राज्य को दिया है। अनेक राज्यों इससे संबंधित कानून बनाए हैं, परंतु आज भी ऐसे कई राज्य हैं, जहां गोवंश हत्याबंदी का कोई कानून नहीं बना है। इससे एक राज्य से दूसरे राज्य में पशु तस्करी बड़े पैमाने पर की जा रही है। इस पर रोक तभी लगेगी, जब विनोबाजी को भारत सरकार द्वारा दिए गए आश्वासन के अनुसार संविधान में संशोधन करके संपूर्ण गोवंश का कत्ल बंद करने के लिए केंद्रीय कानून बनाया जाए।

निष्कर्ष

1. केंद्रीय कानून बनाकर संपूर्ण गोवंश का कत्ल तत्काल प्रतिबंधित कर देना चाहिए।
2. देश से मांस का निर्यात तत्काल बंद करना चाहिए।

ऐसा नीतिगत निर्णय होने पर राष्ट्रीय गोपालन नीति बनानी चाहिए, जिसमें निम्नांकित बिंदु हों :

1. नस्ल सुधार :

(क) स्थानीय नस्लों का चयन कर उनका सुधार किया जाए,
(ख) उन्नत नस्ल के सांड प्रत्येक पंचायत में उपलब्ध कराए जाएं,
(ग) विदेशी वीर्य से संकरण नीति पर पुनर्विचार किया जाए,
(घ) कृत्रिम गर्भाधान की नीति में भी संशोधन किया जाए,
(च) स्वदेशी नस्लों में गुण, वनज आदि देखकर परस्पर संयोग से नस्ल-सुधार किया जाए।

2. गोपालन

(क) ग्रामस्तर पर सहकारी गोशालाएं बनाने को प्रोत्साहित किया जाए,
(ख) माध्यमिक और हायर सेकण्डरी स्कूल में वैज्ञानिक गोपालन को एक अनिवार्य विषय के रूप में रखा जाए,
(ग) शहरों में गोपालन प्रतिबंधित किया जाए, केवल उन्हें अनुमति दी जाए जिनके पास पर्याप्त भूमि और जल हो,
(घ) गोपालन को प्रतिष्ठा दी जाए और उसे एक अत्यंत प्रतिष्ठित प्रवृत्ति माना जाए।

3. गोबर, गोमूत्र, खाद, उर्जा और औषधियां

(क) वैज्ञानिक प्रविधियों से गोबर खाद बनाने का बड़े पैमाने पर किसानों को प्रशिक्षण दिया जाए,
(ख) गोमूत्र से कीट-नियंत्रण की प्रविधियों का भी टीवी, रेडियो, पर्चे, फोल्डर से प्रचार किया जाए,
(ग) गोबर गैस संयंत्रों पर युद्ध स्तर पर प्रयोग किए जाएं और गांव का अधिकांश गोबर, गोबर गैस संयंत्र में उपयोग किया जाए, गांवों में ईंधन के लिए गोबर गैस उपलब्ध कराई जाए।

4. गाय-बैल चालित यंत्रों उपकरणों में संशोधन और प्रचार

(क) अनेक कृषि वैज्ञानिकों ने बैल चालित यंत्रों और उपकरणों में सुधार किए हैं, जिनसे उनकी क्षमता में वृद्धि हुई है और बैलों का कष्ट भी कम हुआ है,
(ख) बैलगाड़ी में भी सुधार हुआ है, लेकिन खरीदने के लिए प्रोत्साहन नीति का अभाव है, उन्नत बैलगाड़ी खरीदने के लिए आसान शर्तो पर ऋण मिलना चाहिए,
(ग) बैल चालित गियर बॉक्स का प्रचार करना चाहिए जैसे आटा पीसना, कुट्टी काटना, तेल निकालना, पानी खींचना आदि,
(घ) एक बैल आधे हार्सपावर और दो बैल यानी एक हार्सपावर से चलने वाले यंत्र और उपकरण बैल शक्ति से चलाए जाएं और उन पर बिजली आदि का खर्च न हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

5. गोदुग्ध को प्रोत्साहन

(क) गोदुग्ध को भैंस के दूध के बराबर भाव मिलना चाहिए और इसको भैंस के दूध में मिलाकर बेचने को हतोत्साहित करना चाहिए,
(ख) कस्बों में गोरस भंडार कायम करने चाहिए, जहां गाय के दूध, दही, छाछ, घी, छेना, मक्खन आदि उपलब्ध हों,
(ग) गोदुग्ध का औषधि मूल्य है और बच्चों के लिए तो यही सर्वोत्तम आहार है। इसका प्रचार अभियान चलाना चाहिए,
(घ) ग्रामस्तर पर गोदुग्ध के लिए शीतलीकरण यंत्र लगाना चाहिए और शहरों में थैलियों में इस दूध का वितरण करने की विकेंद्रित योजना बनानी चाहिए।

6. मृतचर्म इकाइयां

(क) ग्रामों में मृतचर्म का उद्योग पुनर्जीवित करना चाहिए, शवच्छेदन से लेकर मांस, हड्डी, चरबी, सींग, खुर सभी का उपयोग हो इसके लिए व्यवस्थित संयोजन करना चाहिए।

यदि देश में वैज्ञानिक गोपालन का विकास होगा तो हम अपनी अनेक समस्याओं का समाधान कर सकेंगे और शांतिमय क्रांति की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

नरेंद्र भाई की पवनार यात्रा

पिछले दिनों श्री नरेंद्र भाई ने पवनार की यात्रा की। मेरे पास बड़े भाई श्री पंकज का फोन आया कि पापा को पवनार ले जाना है। मैंने तत्काल हां कर दी। पापा पहले से ही भोपाल में थे। मैं इन्दौर से भोपाल के लिए रवान हुआ। रात में ही सारी योजना बना ली गई। 18 जून को सुबह 7:45 बजे हम कार में सारे साजोसामान के साथ ईश्वर का नाम लेकर निकल पड़े। पापा के चेहरे का उत्साह देखते ही बनता था। पिछले चार सालों में यह पहला अवसर था जब कार से इतनी लंबी यात्रा के लिए निकले। पवनार में सभी को पहले ही सूचना दे दी गई। हमारी कार जंगलों के बीच से होते हुए बैतूल, मुलताई की ओर बढ़ चली। चार घंटे चलने के बाद मुलताई के थोड़ा पहले विश्राम के लिए एक ढाबे पर कार रोकी। वहां पापा को कार से नीचे उतारा। वहां नित्य-नैमित्तिक कर्म और स्नान-ध्यान के बाद खटिया पर बैठकर भोजन किया। थोड़े विश्राम के बाद फिर आगे बढ़ चले। जब हम नागपुर पहुंचे तब शाम के पांच बज रहे थे। ज्योति बहन लगातार संपर्क में थीं। नागपुर में थोड़ा नाश्ता लेने के बाद हम पवनार के लिए बढ़ चले। जब हमने पवनार आश्रम में प्रवेश किया तब लगभग सात बज रहे थे। सारी बहनें हमारा बेसब्री से इंतजार कर रही थीं। उन्होंने खूब स्वागत किया। प्रार्थना का समय हो रहा था। पापा को व्हील चेयर पर बैठाया और बाबा कुटी तक ले गए। उन्होंने बाहर से ही बाबा को प्रणाम किया। प्रार्थना के लिए वे बिलकुल एकाग्र हो गए। प्रार्थना समाप्त होने के बाद हम अपने कक्ष में आए। ज्योति बहन ने भोजन की व्यवस्था पहले से ही कर रखी थी। दिनभर की थकान थी। पापा ने भोजन किया और निद्रा देवी की गोद में चले गए। यद्यपि प्रार्थना की घंटी हम तीनों को सुनायी दे गयी थी, परंतु थकान ने उठने नहीं दिया। सुबह निर्मल बहन ने दस्तक दी, फिर कुसुम ताई, गंगाम्मा, प्रवीणा बहन, देवी बहन, कालिंदी ताई, ज्योति बहन, गीता बहन सभी वहां आ गयीं। उनके साथ एकालाप चलता रहा। इसके बाद विष्णु सहस्रनाम में उपस्थित हुए। दोपहर के भोजन के बाद हम लोग वर्धा के लिए निकले। वहां प्रभा बहन अम्मा और विभा बहन से मुलाकात की। इसके पहले विभा बहन ने पापा को अपना पूरा काम दिखाया। जिसे देखकर उन्होंने संतोष जाहिर किया। वहां से हम लोग गोपुरी गए। वहां कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत किया। फिर गांधी विचार परिषद के डायरेक्टर भरत महोदय के यहां काफी देर बैठे। उन्होंने वहां चलने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। शाम के चार बज रहे थे। वहां से चलकर सेवाग्राम पहुंचे। श्री म्हटकर जी ने सूत गुंडी और शॉल से पापा का स्वागत किया। पांच बजे हम लोगों को ब्रह्मविद्या मंदिर में बहनों के साथ बैठना था। हमारे आश्रम पहुंचने पर घंटी बजा दी गयी। पापा को व्हील चेयर पर बैठाया। उन्हें घेरकर सारी बहनें बैठ गयीं। मैंने पापा के बारे में शुरू से आखिरी तक की बातों का वर्णन किया। सभी बहनों ने पापा से बोलने का आग्रह किया। उन्होंने ओम् कहकर उनके आग्रह को पूरा किया। तब गीता बहन ने ओम् धुन गाना प्रारंभ की। उसमें पापा ने भी थोड़ी सहभागिता की। प्रार्थना का समय हो रहा था। हमारी सामूहिक सभा समाप्त हुई। हम सभी प्रार्थना के लिए तैयार हो गए। रात्रि का भोजन अपने कक्ष में ही किया। दिनभर की बातों का स्मरण कर हम रोमांच का आनंद उठाते रहे। दूसरे दिन 20 जून को हमें छिंदवाड़ा के लिए निकलना था। नाश्ते के बाद सुबह एक बार फिर घंटी बजाई गई। सारी बहनें अपना काम छोड़कर बाबा कुटी के आगे एकत्र हुईं। पापा ने बाबा को प्रणाम किया। हम सबने देखा कि उनकी आंखें भर आयी थीं। सारी बहनों के गले भी रूंधे हुए थे। फिर धीरे से किसी ने 'शुभ मंगल हो' का गान शुरू किया। सबने उसमें अपना सुर मिला दिया। हमारी व्हील चेयर धीर-धीरे कार की तरफ चल पड़ी। जब शुभ मंगल हो की धुन खत्म हुई तब तक हम कार के पास पहुंच चुके थे। सबने मिलकर उन्हें कार में बैठाया। रास्ते के लिए ज्योति बहन ने भोजन की व्यवस्था कर दी थी। 'हमारा मंत्र जय जगत, हमारा तंत्र ग्राम स्वराज', राम हरि और अरू आवजो के उद्घोष के साथ उनके बड़े पुत्र ने अपनी कार आगे बढ़ाई। हम जीवन के अद्वितीय सुंदर पलों को अपनी स्मृति में संजोये आगे बढ़ गए। पापा के चेहरे पर जो संतोष के भाव उभरे, उन्हें देखकर हम दोनों भाई मुस्कराये बिना नहीं रह सके।

छिंदवाड़ा में श्री नरेंद्र भाई विवाह समारोह में सम्मिलित हुए। उनके दामाद श्री विद्यासागर पाण्डे की नातिन का विवाह था। विवाह में उपस्थित सभी लोग मामा जी को अपेन बीच पाकर अत्यंत प्रसन्न हो गए। छिंदवाड़ा से हम लोग सुबह लगभग 11 बजे भोपाल के लिए निकले। रास्ते में तामिया के निकट पातालकोट गांव हैं। वह काफी गहराई में स्थित है। उसे देखने के लिए गए। वहीं पर हमने भोजन किया। फिर हमारी गाड़ी अपने गंतव्य की ओर बढ़ चली। छिंदवाड़ से भोपाल का रास्ता बहुत ही सुंदर है। घने जंगलों के बीच से हमारी कार जा रही थी। रास्ते में जामुन बेचने वाले खड़े थे। पापा ने जामुन खरीदने का आग्रह किया। बड़े ही मीठे जामुन थे। हम लगभग रात 9 बजे भोपाल पहुंचे। इस तरह हमारी पापा के साथ लगभग 1 हजार किलोमीटर की कार यात्रा संपन्न हुई।

प्रेरक कहानियाँ

मौन शास्त्रार्थ

कई शताब्दियों पहले इटली में पोप ने यह आदेश दिया कि सभी यहूदी कैथोलिक में परिवर्तित हो जाएं अन्यथा इटली छोड़ दें. यह सुनकर यहूदी समुदाय में बहुत रोष व्याप्त हो गया. ऐसे में पोप ने उन्हें समझौते की पेशकश करते हुए शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया. यदि यहूदी जीत जाते तो वे इटली में रह सकते थे, और यदि पोप जीत जाता तो यहूदियों को कैथोलिक बनना पड़ता या इटली छोड़ना होता.

यहूदियों के सामने कोई विकल्प नहीं था. उन्होंने शास्त्रार्थ के लिए उपयुक्त व्यक्ति के नाम पर विचार किया लेकिन कोई इसके लिए आगे नहीं आया. विद्वान पोप के साथ शास्त्रार्थ करना आसान न था. अंततः यहूदियों ने मोइशे नामक एक ऐसे व्यक्ति को चुन लिया जो हमेशा ही दूसरों की जगह पर काम करने के लिए तैयार हो जाता था. बूढ़ा और गरीब होने के नाते उसके पास खोने के लिए कुछ न था इसलिए वह तैयार हो गया. उसने सिर्फ एक शर्त रखी कि शास्त्रार्थ केवल संकेतों के माध्यम से हो क्योंकि वह साफ-सफाई का काम करने का नाते बातें करने का आदी नहीं था. पोप इसके लिए राजी हो गया.

शास्त्रार्थ के दिन पोप और मोइशे आमने-सामने बैठे. पोप ने अपना हाथ उठाकर तीन उंगलियां दिखाईं. मोइशे ने अपने उत्तर में हाथ उठाकर एक उंगली दिखाई. फिर पोप ने अपने सिर के चारों ओर उंगली घुमाई. इसके जवाब में मोइशे ने उंगली से जमीन की ओर इशारा किया. पोप ने भोज प्रसाद और मदिरा का कप उठाया. यह देखकर मोइशे ने एक सेब निकाल कर दिखाया.

यह देखकर पोप अपनी गद्दी से उतर गया और उसने स्वयं को पराजित घोषित करके कहा कि मोइशे वाकई अत्यंत ज्ञानी है. अब यहूदी इटली में निर्बाध रह सकते थे.

बाद में कार्डिनल पादरियों के साथ बैठक में उन्होंने पोप से पूछा कि शास्त्रार्थ में क्या घटा. पोप ने कहा, 'पहले मैंने तीन उंगलियों से पवित्र त्रिमूर्ति की ओर इशारा किया. मोइशे ने इसके उत्तर में एक उंगली उठाकर बताया कि हमारी आस्था के केंद्र में मात्र एक ही ईश्वर है. फिर मैंने अपने सिर के चारों ओर उंगली घुमाकर बताया कि ईश्वर हमारे चारों ओर है. मोइशे ने जमीन की ओर इशारा करके कहा कि ईश्वर हमारे साथ यहां इसी क्षण मौजूद है. मैंने भोज प्रसाद और मदिरा का कप दिखाकर बताया कि परमेश्वर सारे पापों से हमारा उद्धार करता है, और मोइशे ने सेब दिखाकर सर्वप्रथम आद्य पाप का स्मरण कराया, जिससे मुक्ति संभव नहीं है. इस तरह उसने हर सवाल पर मुझे मात दी और मैं शास्त्रार्थ जारी नहीं रख सका.

उसी दौरान यहूदी समुदाय में लोग बूढ़े मोइशे से यह पूछने के लिए जमा हुए कि वह शास्त्रार्थ में कैसे जीत गया. 'मुझे खुद नहीं पता,' मोइशे ने कहा. 'पहले उसने मुझे बताया कि हमें तीन दिनों में इटली छोड़ना होगा. इसके जवाब मे मैंने कहा कि एक भी यहूदी इटली छोड़कर नहीं जाएगा. फिर उसने इशारे से कहा कि पूरा इटली यहूदियों से रिक्त कर देगा. इसके जबाव में मैंने जमीन की ओर इशारा करके कहा कि हम यहीं रहेंगे और टस-से-मस नहीं होंगे.'

'फिर क्या हुआ?', एक औरत ने पूछा.

'होना क्या था!', मोइशे ने कहा, 'उसने अपना भोजन दिखाया और मैंने अपना खाना निकाल लिया.'

भविष्यवेत्ता

एक बहुत पूरानी यूनानी कहानी सुनाता हूं आपको. उन दिनों कहीं एक बहुत प्रसिद्ध भविष्यवेत्ता रहता था. एक दिन वह राह चलते कुएं में गिर गया. हुआ यूं कि वह रात के दौरान तारों का अवलोकन करते हुए चला जा रहा था. उसे पता न था कि राह में कहीं एक कुंआ है, उसी कुंए में वो गिर गया.

उसके गिरने और चिल्लाने की आवाज सुनकर पास ही एक झोपड़ी में रहनेवाली बुढ़िया उसकी मदद को वहां पहुंच गई और उसे कुंए से निकाला.

जान बची पाकर भविष्यवेत्ता बहुत खुश हुआ. वह बोला, तुम नहीं आतीं तो मैं मारा जाता! तुम्हें पता है मैं कौन हूं? मैं राज-ज्योतिषी हूं. हर कोई आदमी मेरी फीस नहीं दे सकता. यहां तक कि राजाओं को भी मेरा परामर्श लेने के लिए महीनों तक इंतजार करना पड़ता है. लेकिन मैं तुमसे कोई पैसा नहीं लूंगा. तुम कल मेरे घर आओ, मैं मुफ्त में तुम्हारा भविष्य बताऊंगा.

यह सुनकर बुढ़िया बहुत हंसी और बोली, यह सब रहने दो! तुम्हें अपने दो कदम आगे का तो कुछ दिखता नहीं है, मेरा भविष्य तुम क्या बताओगे?

सही समय

ऊंटों का एक व्यापारी किसी गांव में बहुत उम्दा ऊंट वाजिब दाम पर बेचने के लिए आया. गांव में हूसेप नामक व्यक्ति को छोड़कर लगभग सभी ने कम-से-कम एक ऊंट खरीद लिया.

कुछ समय बाद एक और व्यापारी बहुत अच्छे ऊंट बेचने के लिए गांव में आया लेकिन उसके ऊंट बहुत महंगे थे.

इस बार हूसेप ने कुछ ऊंट खरीद लिए. किसी और ने ऊंट खरीदने की हिम्मत नहीं की.

पिछली बार तो ऊंट कौड़ियों के मोल मिल रहे थे. तब तुमने एक भी ऊंट नहीं खरीदा, लेकिन इस बार तुमने लगभग दुगनी कीमत पर ऊंट खरीद लिए, हूसेप के दोस्त ने हैरत से पूछा.

वे सस्ते ऊंट मेरे लिए बहुत महंगे थे क्योंकि उन दिनों मेरे पास बिल्कुल भी पैसे नहीं थे, हूसेप ने कहा, और ये ऊंट तुम्हें बहुत महंगे लग रहे हैं लेकिन मेरे लिए ये सस्ते हैं क्योंकि अब मेरे पास उन्हें खरीदने के लिए काफी रुपये हैं.

रजि. MPHIN/2003/11246
Postal Reg. ICD. (MP) 1106/2012-14
गोविभा
20 जुलाई, 2014

पत्र संपुट

महोदय,

निष्पक्षता के बारे में मेरे विचार प्रस्तुत हैं। हमारा चुनाव आयोग सर्वथा निष्पक्ष रूप से काम करता है। इतने बड़े पैमाने पर काम करने पर कुछ घटनाओं को देखकर पक्षपात का आरोप लगाना ठीक नहीं है। टी.एन.शेषन जब चुनाव आयुक्त थे तब उन्होंने सर्वथा निष्पक्ष रूप से उत्तम काम किया और चुनाव आयोग की कार्य पद्धति में बुनियादी सुधान किए। उस पद से निवृत्त होने के बाद वे किसी पक्ष के प्रतिनिधि बने। परिस्थिति के अनुसार व्यक्ति के विचार बदलते हैं। जनरल वी.के.सिंह जब तक सेनाध्यक्ष थे उन्होंने सर्वथा निष्पक्ष रूप से काम किया। निवृत्ति के बाद वे अण्णा हजारे के साथी बने और निष्पक्ष ही थे। बाद में किसी दल के प्रतिनिधि बनकर मंत्री बने। वे मंत्री बनकर भी संविधान के अनुरूप सर्वथा निष्पक्ष रहकर ही काम करेंगे। जयप्रकाश जी भी सर्वथा निष्पक्ष रहे। मगर जब इंदिरा जी ने बहुत ज्यादती की, न्यायालय की बात नहीं मानी, इमरजेंसी लगाई और पूरी तरह सत्ता लोलुप होकर सारी औचित्य की सीमाएं छोड़ दी तब जयप्रकाश जी का जनजाग्रति का आधार लेकर सत्ता परिवर्तन के लिए आंदोलन करना पड़ा। शस्त्र उठाना पड़ा कृष्ण की तरह। मगर जब जनता पार्टी सत्ता में आई तो उसमें भी चौधरी चरणसिंह जैसे अनेक सत्तालोलुप आ गए और उस कमजोरी का लाभ लेकर इंदिरा जी ने पुन: सत्ता हथिया ली। मगर इंदिरा जी ने अपने आप में परिवर्तन भी कर लिया था। उस समय सर्व सेवा संघ में भी विभाजन हुआ। जो लोग अपने को निष्पक्ष कहते थे उनमें भी कुछ लोग इंदिरा जी के पक्ष में चले गए। निर्मला देशपांडे, केयूर भूषण तथा अनेक अन्य निष्पक्ष कहे जाने वाले इंदिरा जी और कांग्रेस की तरफ झुके हुए थे। अत: निष्पक्षता, परिस्थिति और मनस्थिति के अनुरूप बदल जाती है।

- चिन्मय व्यास
मालदेवता, शिमला

खादी-सभा निमंत्रण
9-10 सितंबर, 2014

खादी मिशन के तत्वावधान में 9 और 10 सितंबर को सेवाग्राम में खादी सभा आयोजित की गई है। खादी मिशन के संयोजक श्री बालभाई के नेतृत्व में खादी रक्षा अभियान चलाया जा रहा है। आगामी रणनीति तय करने के लिए बैठक में निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार किया जाएगा : 1. खादी-रक्षा अभियान की प्रगति, 2. सरकार पर कम से कम निर्भर रहते हुए, खादी के बुनियादी सिद्धांत और नियमों की मर्यादा में ग्राम समूह और अंतर्राष्ट्रीय सामान्य जनता के अधिकाधिक सहयोग तथा सहानुभूति के आधार पर खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम जारी रखने की पद्धति विकसित करना। 3. संयोजक की अनुमति से अन्य विषय। सन 2015 महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित विरासत की क्रांतिकारी खादी का शताब्दी वर्ष है। अब समय आया है जब कि दृढ-संकल्प और पूरी निष्ठा के साथ जन-जागरण और जन-सहयोग के द्वारा पूरे देश में लहर निर्माण करे ताकि हमेशा के लिए नदी की धारा बदली जा सके। दिनांक 11 सितंबर को विनोबा जयंती है। उस निमित्त ब्रह्मविद्या-मंदिर, पवनार में सुबह 9.00 बजे से 11.30 बजे तक सामुदायिक प्रार्थना होगी। उसमें आप सम्मिलित हो सकते हैं। आप कितने साथियों के साथ आ रहे हैं और कब पहुंचेंगे, इसकी सूचना कृपया गोपुरी, वर्धा पते पर यथाशीघ्र दीजिए ताकि व्यवस्था में आपको कोई असुविधा न हो।

खादी-मिशन के कार्य-संचालन हेतु खादी-सभा के अवसर पर देश की खादी-ग्रामोद्योग संस्थाओं की ओर से प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। कृपया सहयोग राशि का ड्रॉफ्ट **'खादी-मिशन सेवा ट्रस्ट'** के नाम पर, वर्धा (महाराष्ट्र) के किसी भी बैंक शाखा का भेजिए।

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

आजीवन शुल्क : 1,000 ● वार्षिक शुल्क : रु. 50 ● एक प्रति : रु. 5

गोविभा
रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,